कालिका पुराण[1] में शिवतत्त्व

कालिका पुराण की गणना उपपुराणों में होती है। इस पुराण का मुख्य विषय देवी-माहात्म्य को प्रतिष्ठित करना है। मार्कण्डेय पुराण की भाँति इसमें भी देवी के माहात्म्य की चर्चा विस्तार से की गयी है। इस पुराण के प्रमुख वक्ता मार्कण्डेय मुनि हैं। इस पुराण में कई कथाओं का रूप परम्परा से पायी जानेवाली कथाओं से हटकर है। देवी के माहात्म्य से संबंधित होनेपर भी प्रसंगवश शिव की महिमा का गान किया गया है। उस स्थल पर उन्हें ही सर्वोच्च देव स्वीकार किया गया है।

भगवान् शिव का स्वरूप

इस पुराण में भगवान् शिव को परम तत्त्व अथवा ब्रह्म स्वीकार किया गया है तथा उनके निर्गुण एवं सगुण दोनों रूपों की चर्चा की गयी है। निर्गुणरूप में वे परात्पर, मन-वाणी से अगोचर, देव-दानव सभी से अज्ञेय, स्वयंभू, एक, नित्य, शुद्ध, अव्यक्त तथा अचिन्त्य आदि हैं। सगुणरूप में वे सृष्टिकर्त्ता, पालन एवं संहारकर्त्ता, ब्रह्मा, विष्णु एवं रुद्रस्वरूप, जगत्स्वरूप, विश्वात्मा, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, अजन्मा, जगत्पति, देवों के देव तथा भोग-मोक्ष आदि के दाता हैं।

इस पुराण में दक्ष-यज्ञविध्वंस की कथा लीक से हटकर है। सती को जब यह पता चला कि दक्ष ने यज्ञ में न तो उनको और न ही शिव को आमंत्रित किया है तो उन्होंने पति के अपमान से उत्पन्न शोक के कारण योग के सहारे अपने प्राण को वहीं(कैलास) पर त्याग दिया। जब शिव को सती की सखियों विजया आदि से इसका पता चला तो उन्होंने क्रोध कर स्वयं यज्ञभूमि में जाकर दक्ष के यज्ञ का विनाश कर दिया। उस समय जब सभी देव एवं ऋषिगण आदि भाग चले तो यज्ञ मृग का रूप धारण कर आकाश में भागा। शिव उसका पीछा करने लगे। पुन: ब्रह्मा के संकेत से यज्ञ आकाश से नीचे उतरकर माया का आश्रय ले सती के शरीर में प्रवेश कर गया। जब पीछा करते हुए शिव सती के शव के समीप आये तो उन्हें पुन: सती की याद सताने लगी। शोक से भरकर वे सती के शरीर को कन्धे पर रखकर पागलों की तरह घूमने लगे। उनकी इस दशा को देखकर योग माया से अदृश्य होकर ब्रह्मा, विष्णु एवं शनैश्चर ने सती के शव के अन्दर प्रवेशकर उसे खण्ड-खण्ड कर दिया। जहाँ पर सती का सिर गिरा था वहाँ शिव रुककर शोकाकुल होकर लम्बी-लम्बी साँसें लेने लगे। वहाँ पर उन्हें बैठे देखकर ब्रह्मादि देवगण दूर से ही सांत्वनापरक वचन बोलते हुए उनके समीप आने लगे। उन देवों को आते देखकर शिवजी वहीं पर लिंग-रूप में परिणत हो गये। जगद्गुरु लिंग-रूप शिव को संतुष्ट करने के लिये देवगणों ने उनकी स्तुति करनी शुरू कर दी।

अपनी स्तुति में देवगणों ने शिव को महादेव, सबके अन्त:करण, वर देनेवाले, अव्यय, अनादि,

1. यहाँ पर 'कालिका पुराण' की जिस प्रति का उपयोग किया गया है वह डॉ. चमनलाल गौतम द्वारा संपादित तथा संस्कृति संस्थान, ख्वाजा कुतुब, वेदनगर, बरेली(उ. प्र.) द्वारा 2 खण्डों में प्रकाशित है। यह पुराण संक्षिप्त करके छापा गया है, इसलिये यहाँ जो संदर्भ दिये जायँगे वे मूल पुराण के संदर्भों से भिन्न हो सकते हैं।

योगविद्या, शान्त, ब्रह्म, लिंगमूर्ति, जटाधारी, विद्या की शक्ति को धारण करनेवाले, ज्ञानरूपी अमृत के अन्त(अर्थात् ज्ञानामृत की पराकाष्ठा), प्रलय समुद्र में स्थित रहनेवाले, प्रलय तथा स्थिति के कारण, श्रेष्ठतम, परमात्मा, परमार्थस्वरूप, ज्ञान के दीपक, स्रष्टा, महेश्वर, सभी भूतों के स्वामी, भगवान्, सभी कारणों के भी कारण आदि कहा है(कालिका पुराण, प्रथम खण्ड 18/55-67)। स्तुति के कुछ अंश देखें-

आदिमध्यान्तभूताय स्वभावानलदीप्तये।
नमः शिवाय शान्ताय ब्रह्मणे लिंगमूर्तये।।
प्रलयार्णवसंस्थाय प्रलयस्थितिहेतवे।
नमः शिवाय शान्ताय ब्रह्मणे लिंगमूर्तये।।
ॐ नमः परमार्थाय ज्ञानदीपाय वेधसे।
नमः शिवाय शान्ताय ब्रह्मणे लिंगमूर्तये।। (कालिका. पु. 1/18/60, 61, 64)

अर्थात्-जो सभी भूतों के आदि, मध्य एवं अन्त हैं, जो स्वाभाविक रूप से अग्नि के समान तेजस्वी हैं ऐसे लिंगमूर्ति ब्रह्मस्वरूप शान्त शिव को नमस्कार है। जो प्रलय के समुद्र में विराजमान हैं तथा प्रलय एवं स्थिति के कारण हैं, उन लिंगमूर्ति ब्रह्मस्वरूप शान्त शिव को नमस्कार है। परमार्थस्वरूप, ज्ञान के दीपक तथा स्रष्टा को नमस्कार है। लिंगमूर्ति ब्रह्मस्वरूप शान्त शिव को नमस्कार है।

देवताओं द्वारा उपरोक्त स्तुति के बाद भगवान् शिव लिंगरूप त्यागकर अपने वास्तविक स्वरूप में प्रकट हो गये। उनके प्रकट होने के बाद ब्रह्मा ने उनकी पुनः स्तुति करनी आरंभ कर दी। अपनी इस स्तुति में उन्होंने शिव को हिरण्यबाहु, ब्रह्मा, विष्णु, जगत्पति, सृष्टि, स्थिति एवं विनाश के हेतु, चराचर जगत् में व्याप्त अष्टमूर्तिस्वरूप, मुमुक्षुओं द्वारा आराधित होकर मुक्ति देनेवाले, राग-द्वेषादि बन्धनों से छुड़ानेवाले, परम तत्त्व तथा शुद्ध आदि कहा है।(कालिका पु. प्रथम खण्ड 18/70-82)

हिरण्यबाहो ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं जगतः पतिः।
सृष्टिस्थितिविनाशानां हेतुस्त्वं केवलं हरः।।
त्वामाराध्य महादेव मुक्तिं याता मुमुक्षवः।
रागद्वेषादिभिस्त्यक्ताः संसारविमुखा बुधाः।। (कालि. पु. 1/18/70, 72)

अर्थात्-हे हर! आप ही हिरण्यबाहु ब्रह्मा, विष्णु तथा जगत्पति हैं, आप ही जगत् की सृष्टि, स्थिति एवं विनाश के कारण हैं। हे महादेव! आप की आराधना से मुमुक्षु मुक्ति पाकर राग-द्वेषादि से मुक्त हो जाते तथा बुद्धिमान् लोग संसार से विमुख(अथवा वैराग्यवान्) हो जाते हैं।

एक अन्य स्थल पर ब्रह्माजी भगवान् शिव के स्वरूप के बारे में कहते हैं कि वे विष्णुस्वरूप, श्रेष्ठ, शान्त, सूक्ष्म, स्थूलतर, निरंजन, यतियों द्वारा ध्येय, परात्पर, निर्मल, सर्वगामी, राग, लोभ आदि

मल से रहित हैं।

प्रभविष्णुः परः शान्तः सूक्ष्मः स्थूलतरः सदा।

.. ।।

निरञ्जनं ध्यानगम्यं यतीनां परात्परं निर्मलं सर्वगामी।

मलैर्हीनं रागलोभादिभिर्यत ....।। (कालिका पु. 1/19/5-6)

मार्कण्डेयजी जगत् में सार तत्त्व क्या है? इसकी चर्चा करते हुए कहते हैं कि एकमात्र शान्त, अनन्त, अच्युत, परात्पर, ज्ञानमय, विशेष, अद्वैत, अव्यक्त, अचिन्त्यरूपवाले शिव के अतिरिक्त अन्य कुछ भी सार नहीं है।

एकं शिवं शान्तमनन्तमच्युतं परात्परं ज्ञानमयं विशेषम्।

अद्वैतमव्यक्तमचिन्त्यरूपं सारं त्वेकं नास्ति सारं तदन्यत्।।

(कालिका पु. 1/28/4)

भगवान् शिव को अर्द्धनारीश्वर(कालि. पु. 2/3/66), अक्षर एवं परम ब्रह्म(2/3/73), सर्वभूतेश(2/4/172), सर्वज्ञ, सर्वत्र गमन करनेवाले, सर्वात्मा, सबके हृदय में निवास करनेवाले, सबको विभूति प्रदान करनेवाले(2/5/36), विभूतिधारी, व्याघ्रचर्म, जटा, तथा कपालधारी, सर्प के आभूषण धारण करनेवाले, गले में विष को धारण करनेवाले, त्रिनेत्र, अव्यक्तजन्मा, ब्रह्मा तथा इन्द्रादि द्वारा अज्ञेय(2/5/69-71, 87), शान्त, सृष्टि, स्थिति एवं लय के कारण, प्रपंचरहित, जगत् के हितस्वरूप तथा परमगति(2/5/95-96) कहा गया है।

अन्य स्थलों पर शिव को प्रधान, सत्त्व, रज एवं तम से युक्त, समस्त जगत् के पुरुष(2/6/18), चन्द्रशेखर, देवदेव, जगत्पति, शाप एवं अनुग्रहकर्त्ता, प्रलय-काल में सभी लोकों का संहार करनेवाले, भक्तों को विभूति प्रदान करनेवाले, अनेक रूप धारण करनेवाले तथा सुन्दर रूपवाला(2/6/26-27) कहा गया है। वसिष्ठजी बेताल एवं भैरव से भगवान् शिव के बारे में बताते हुए कहते हैं कि वे तेजोमय, सदाशुद्ध, ज्ञानामृत से परिपूर्ण, जगत्स्वरूप, चिदानन्द, ब्रह्मा एवं विष्णु का रूप धारण करनेवाले महादेव सदा महायोग[1] से युक्त रहते हैं। उनके स्वरूप का कथन करने में कोई भी समर्थ नहीं है।

तेजोमयः सदा शुद्धो ज्ञानामृतविवर्धितः।

जगन्मयश्चिदानन्दः शौरिब्रह्मस्वरूपधृक्।।

महादेवो महामूर्तिर्महायोगयुतः सदा।

जगत् तस्य रूपाणि तानि को गदितुं क्षमः।। (कालि. पु. 2/8/124-125)

भगवान् शिव पाँच मुख, दस भुजा तथा पन्द्रह नेत्रवाले, त्रिशूल, खट्वांग, डमरू, नीलकमल

1. महायोग के लिये इसी पुस्तक के लेख 'लिंग पुराण में शिवतत्त्व तथा उसकी उपासना' को देखिये।

आदि को धारण करनेवाले, अष्टमूर्तिरूप तथा अष्ट ऐश्वर्यों से युक्त हैं। उनका सद्योजात नामक मुख शुद्ध स्फटिक के समान शुक्ल वर्ण का, वामदेव पीत वर्ण का, अघोर नील वर्ण का, तत्पुरुष रक्त वर्ण का तथा ईशान श्याम वर्ण का है(2/8/136-150)।

जब बेताल एवं भैरव की पूजा से सन्तुष्ट हो भगवान् शिव ने उन्हें दर्शन दिया तो उन दोनों ने शिव की स्तुति की। वे अपनी स्तुति में शिव को सर्वज्ञानमय, परम, संसारसागर से उबारनेवाले, परमात्मा, परेश, पुरुषोत्तम, कूटस्थ, जगद्व्यापी, प्रधान, तत्त्वज्ञान के घर, सांख्य-योग के धाम, नित्य, अनित्य, जगत्कर्त्ता, लयकर्त्ता, एक और अनेक रूपवाले, शान्त, जगन्मय, निर्विकार, निराधार, नित्यानन्द, सनातन, विष्णु, ब्रह्मा तथा इन्द्ररूप, जगत्पति, योगेश्वर, अगम्य, देवदेव, देवताओं के शरणस्थल, विकल्पहीन, मुनियों की गति, योगियों द्वारा गम्य, विश्वात्मन्, ब्रह्मा के रूप में सृष्टि करनेवाले, विष्णुरूप से स्थिति बनाये रखनेवाले तथा रुद्ररूप से अन्त करनेवाले, अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी तथा आकाशरूप, यज्ञ, मंत्र तथा होता-रूप, अष्टमूर्तिरूप, अनन्तमूर्ति, सहस्त्रबाहु, सहस्त्रमूर्ति, नित्य और अनित्य स्वरूपवाले, नित्यधामस्वरूप, परतत्त्व, ब्रह्मा एवं विष्णु द्वारा अगम्यलिंगवाले, देव-दानव द्वारा अगम्य तथा परमेश्वर आदि संज्ञाओं तथा विशेषणों से विभूषित करते हैं(2/8/179-198)। स्तुति के कुछ अंश इस प्रकार हैं-

त्वं परः परमात्मा च परेशः पुरुषोत्तमः।
त्वं कूटस्थो जगद्व्यापी प्रधानः परमेश्वरः।।
त्वं नित्यस्त्वमनित्यश्च जगत्कर्ता लयः स्मृतः।
एकोऽनेकस्वरूपश्च शान्तचेष्टो जगन्मयः।।
निर्विकारो निराधारो नित्यानन्दः सनातनः।
त्वं विष्णुस्त्वं महेन्द्रस्त्वं ब्रह्मा त्वं जगतां पतिः।।(कालि. पु. 2/8/180, 182-183)

अर्थात्- तुम पर, परमात्मा, सर्वश्रेष्ठ स्वामी, पुरुषोत्तम, कूटस्थ, जगत् में व्याप्त, प्रधान एवं परमेश्वर हो। तुम नित्य, अनित्य, जगत्कर्त्ता, लयकर्त्ता, एक और अनेक रूपवाले, शान्त चेष्टावाले तथा विश्वरूप हो। तुम निर्विकार, निराधार, नित्यानन्द, सनातन, विष्णु, इन्द्र, ब्रह्मा तथा जगत्पति हो।

उपर्युक्त सभी उद्धरणों में कथित शिव के विशेषण तथा उनकी संज्ञायें उन्हें परब्रह्म सिद्ध करती हैं। वही परब्रह्म सगुणरूप धारण करके सभी प्रकार की उपाधियों से विभूषित हो जाता है। इस जगत् में शिव ही एकमात्र तत्त्व है जिसका अभिन्न अंग शक्ति या देवी हैं। शिव शक्तियुक्त हैं, दोनों में अभेद है। भेद केवल सृष्टि-प्रक्रिया के प्रारंभ हो जानेपर होता है। सृष्टि के लय हो जानेपर तथा सृष्टि से पूर्व शिव-शक्ति में अभेद ही रहता है। शिव की इच्छा से शक्ति क्रियाशील हो जगत् की सृष्टि आदि व्यापार को चालू कर देती है।

शिवोपासना

भगवान् शिव को वरदाता(1/18/56), परमार्थस्वरूप(1/18/64), आराधित होनेपर राग-द्वेषादि से मुक्त कराकर मुक्ति दिलानेवाले(1/18/72), यति लोगों के ध्यान का विषय(1/19/6 तथा 8), सबकी गति तथा जगत् के हितस्वरूप(2/5/95-96), शाप एवं अनुग्रह में समर्थ(2/6/26), भक्तों को विभूति प्रदान करनेवाले(2/6/27), मुनियों की गति(2/8/187) तथा ध्यान एवं पूजन दोनों साथ करने से शीघ्र प्रसन्न होनेवाले(2/8/123) कहा गया है। इन विशेषताओं के कारण भगवान् शिव की उपासना सबको अवश्य करनी चाहिये।

भगवान् शिव की उपासना षडक्षर मन्त्र द्वारा करना सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। शिव से यथेष्ट वर की प्राप्ति हेतु नारदजी गौरी को षडक्षर मन्त्र का ही उपदेश देते हैं। यह मन्त्र शंकरजी को अत्यन्त प्रिय है।

आराधितस्ते प्रत्यक्षो भविष्यति महेश्वरः।
ओम् नमः शिवायेति च सर्वदा शंकरप्रियः॥
चिन्तयन्ती तु तद्रूपं नियमस्था षडक्षरम्।
मन्त्रं जप त्वं गिरिजे तेन तुष्टो भवेद्धरः॥ (कालि. पु. 2/5/8-9)

अर्थात्- (नारदजी पार्वती से कहते हैं कि) आराधना करने से महेश्वर प्रत्यक्ष दर्शन देंगे। **'ओम् नमः शिवाय'** यह(मन्त्र) शंकर को सदा ही प्रिय है। तुम उनके स्वरूप का चिन्तन करते हुए नियम में स्थित रहकर षडक्षर मन्त्र का जप करो, इससे शिव सन्तुष्ट हो जायँगे।

गिरिजा को जो उपदेश दिया गया है वह सभी के लिये है। गिरिजा को तो लोगों को उपदेश देने के लिये माध्यम बनाया गया है। इस उपदेश का भाव यह है कि जप का नियम लेकर निश्चित मात्रा में शिव का ध्यान करते हुए जप करें। ऐसा करने से शिवजी सन्तुष्ट हो दर्शन देते हैं।

इस षडक्षर मन्त्र का उपदेश वसिष्ठजी ने बेताल तथा भैरव को भी दिया है। संध्याचल पर(जहाँ वसिष्ठजी शिवाराधना करते थे) वसिष्ठजी के पास बेताल तथा भैरव जाकर आग्रह करते हैं कि "आप हमें उस मन्त्र एवं नियम या तप को बताइये जिससे शिव की आराधना शीघ्र फल देनेवाली हो।" उत्तर में वसिष्ठजी कहते हैं कि केवल ध्यान से देर में फल प्राप्त होता है जबकि ध्यान एवं पूजन दोनों करने से शीघ्र ही भगवान् शिव प्रसन्न हो जाते हैं(2/8/116-118, 123)।

तदनन्तर वसिष्ठजी कहते हैं कि आप दोनों पंचाक्षर मन्त्र(ॐ को जोड़ देने से षडक्षर हो जाता है), जो पंचवक्त्र भी कहा जाता है, से ईश्वर की पूजा कीजिये। आगे वे पंचाक्षर मन्त्र का ध्यान तथा पूजाविधि का विस्तार से वर्णन करते हैं। ध्यान में शंभु के पाँच मुख, विशाल शरीर, जटा-जूट एवं चन्द्रमा से अलंकृत, दस भुजा, व्याघ्रचर्म का परिधान धारण किये, कण्ठ में विष धारण किये, नागों के हार से सुशोभित वक्ष, भुजंग ही जिनके किरीट का बन्धन तथा कंकण हैं, भस्म से संपूर्ण अंग विभूषित, प्रत्येक मुख में तीन-तीन नेत्र, वृषभ के ऊपर सवार, हाथी के चर्म को ओढ़े हुए-ऐसे रूप

का चिन्तन करना चाहिये। उनके पाँचों मुखों के विभिन्न वर्णों तथा आकृतियों का तथा विभिन्न हाथों में शक्ति, त्रिशूल, खट्वांग, वर, अभय, अक्षसूत्र, भुजंग, डमरू, उत्पल आदि को धारण किये हुए रूप का ध्यान करना चाहिये।

ध्यान के बाद द्वारपालों का चिन्तन कर गणेश आदि का पूजन करे। इसके अनन्तर पाँच भूतों की विशुद्धि का चिन्तन करे। पश्चात् आठ नामों द्वारा अष्टमूर्तियों की अर्चना करे। फिर आठ देवियों - बाला (बामा), ज्येष्ठा, रौद्री, काली, कलविकरणी, देवी, बल - प्रमथिनी तथा मनोन्मथिनी - का पूजन करे। इस रीति से शम्भु का पूजन करके ध्यान में परायण मनवाला हो जावे। फिर अपने गुरुदेव का और (पंचाक्षर) मन्त्र का ध्यान करके माला के माध्यम से जप करे। (कालि. पु. 2 / 8 / 129 - 158)

इस पुराण में मालाधारण करने का मन्त्र तथा मन्त्रों के जप की विधि का भी विस्तार से वर्णन किया गया है। किसी भी प्रकार के मन्त्र को जपने से पहले माला पर जल छिड़ककर मण्डल में रखकर अथवा दाहिने हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्र से उसका पूजन करना चाहिये -

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ।।[1]
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ।

(कालि. पु. 2 / 12 / 113 - 114 तथा 2 / 14 / 145)

माला की वन्दना के बाद उसे दाहिने हाथ में लेकर मध्यमा वा अनामिका पर स्थापित कर अगूँठे के अग्रभाग से जप करें। जप करते समय तर्जनी को माला से दूर ही रखे अर्थात् उससे स्पर्श न कराये। यह ध्यान रखना चाहिये कि माला के मनके आपस में स्पर्श न करें। अर्थात् जप करते समय एक बार में एक ही मनके का स्पर्श (अगूँठे अथवा जप करनेवाली अगुँली से) हो। अगर मन्त्र जपते समय एक बार में दो मनके का एक साथ स्पर्श हो जाय तो वह जप निष्फल हो जाता है। जपते समय माला को हृदय के समीप रखे। देवता का चिन्तन करते हुए ही जप करना चाहिये। बायें हाथ से माला का स्पर्श न करे। रुद्राक्ष की माला उत्तम होती है। माला किस प्रकार की होनी चाहिये इसका भी विस्तार से वर्णन किया गया है। (कालि. पु. 2 / अध्याय 12)

हाथ में माला इस प्रकार ग्रहण करना चाहिये कि वह जप करते समय हाथ से छूट न जाय अथवा टूट कर गिर न जाय। माला का हाथ से गिर जाना या टूट जाना विघ्नकारक होता है। ठीक तरह से जप किया जाय तो वह फलदायी होगा अन्यथा माला टूटने आदि जैसी गलती पर फल उल्टा भी हो सकता है।

बिना संख्या से जो जप किया जाता है वह जप निष्फल होता है। माला से जप करके उस

---

1. कर्मकाण्ड की पुस्तकों में इस मन्त्र के साथ एक और मन्त्र दिया गया है जो इस प्रकार है -

ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्धयर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।

(नित्यकर्म - पूजा प्रकाश, पृ. 46, गीताप्रेस, गोरखपुर)

माला का मस्तक में अथवा प्रांशु स्थान में विन्यास करना चाहिये। इसके अनन्तर स्तुति का पाठ करना चाहिये और अन्त में जिस कामना के निमित्त जप किया जा रहा हो उसका निवेदन करना चाहिये।

अनाख्यातं च यज्जप्तं तस्य तन्निष्फलं भवेत् ।
जप्त्वा मालां शिरोदेशे प्रांशु स्थानेऽथ वा न्यसेत् ।।
स्तुतिपाठं ततः कुर्यादिष्टकामं निवेद्य च । (कालि. पु. 2/12/36-37)

इस पुराण में वाराणसी की महिमा बताते हुए कहा गया है कि वहाँ पर आराधना करने पर भगवान् शिव शीघ्र ही दर्शन देते हैं। यहाँपर भगवान् शिव स्वयं नित्य निवास किया करते हैं। यह पुरी आकाश में स्थित है। यहाँ जो अपने प्राण त्यागता है उसको यहाँ दिव्य ज्ञान प्राप्त होता है। उसे महादेव स्वयं ही संसार के आवागमन की ग्रन्थी से मुक्त करते हैं तथा वह अगले जन्म में परमयोगी हो जाता है। और इस प्रकार वह निर्वाण को प्राप्त कर लेता है(कालि. पु. 2/8/61-65)।

दूसरा सिद्धिदायक क्षेत्र कामरूप है। वहाँपर शंकरजी पार्वतीसहित सदा ही सन्निहित रहा करते हैं। शम्भु के नेत्र से भस्मीभूत हुए कामदेव ने भगवान् शम्भु के अनुग्रह से वहाँपर रूप को प्राप्त किया था, इसीलिये तभी से वह क्षेत्र कामरूप नामवाला हो गया। यहाँ धर्म, अर्थ और काम सभी की प्राप्ति होती है।(2/8/70-78)

त्रिदेवों की एकता

इस पुराण में त्रिदेवों की एकता का विस्तृत विवेचन दो-तीन अध्यायों में किया गया है। एक स्थल पर ब्रह्माजी भगवान् से कह रहे हैं कि हम सब(ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव) एक ही स्वरूपवाले हैं, अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश्वर-तीनों एक ही शक्ति के स्वरूप हैं। हम सब कार्यों के भेद से ही भिन्न-भिन्न रूपवाले हैं। यदि कार्यों में भेद न हो तो इन रूपों के भेद का कोई प्रयोजन नहीं रह जाता। मूलत: एक होकर भी भिन्न-भिन्न स्वरूपों को ग्रहण कर हम तीन हो जाते हैं।

एकस्वरूपा हि वयं भिन्ना कार्यस्य भेदतः ।
कार्यभेदो न सिद्धश्चेद्रूपभेदोऽप्रयोजनः ।।
एक एव त्रिधा भूत्वा वयं भिन्नस्वरूपिणः। (कालि. पु. 1/9/32-33)

किसी प्रंसग में विष्णुजी भगवान् शिव से कह रहे हैं कि ब्रह्माजी आपसे भिन्न नहीं है, न आप ही ब्रह्माजी से भिन्न हैं और आप दोनों से मैं भी भिन्न नहीं हूँ; हम दोनों की यह अभिन्नता सनातन(अर्थात् सदा से चली आ रही है) है। आप कौन हैं? मैं कौन हूँ तथा ब्रह्मा कौन हैं? ये तीनों ही सृष्टि, स्थिति एवं लय के कारणभूत एक ही सत्ता के तीन अंश हैं।

न ब्रह्मा भवतो भिन्नो न शम्भुर्ब्रह्मणस्तथा ।
न चाहं युवयोर्भिन्नोऽभिन्नत्वं सनातनम् ।।

....

अंशत्रयमिदं भिन्नं सृष्टिस्थित्यन्तकारणम्।। (कालि. पु. 1/11/51, 53)

आगे कहा गया है कि एक परमेश्वर ही तीन शरीरों (ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव) में प्रकाश किया करते हैं। ज्ञानरूप परमात्मा अनादि हैं। वे सृजन, पालन एवं संहार करनेवाले होनेपर भी एक ही हैं। वे ही ब्रह्मा, विष्णु और महेश पृथक्-पृथक् संज्ञा प्राप्त करनेवाले हैं (कालि. पु. 1/12/36-38)।

उपसंहार

इस शाक्त पुराण में मुख्य रूप से देवी-माहात्म्य की चर्चा है फिर भी प्रसंगवश शिव के माहात्म्य का वर्णन प्राप्त होता है। इस पुराण में शिव को परम तत्त्व मानते हुए समस्त सृष्टि का उन्हीं से विस्तार दिखाया गया है। निर्गुण शिव जब माया का आश्रय लेकर सगुण रूप धारण करते हैं तो ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा अन्य देव-असुर सहित समस्त चराचर जगत् का निर्माण होता है। प्रलयकाल में जब वे अपनी माया को समेट लेते हैं तो माया उनके अन्दर सुप्त हो जाती है और वे स्वयं निष्क्रिय या आत्मलीन हो जाते हैं।

निर्गुणरूप में शिव एक, नित्य, शुद्ध, बुद्ध, निष्प्रपंच, अज्ञेय, अव्यक्त, स्वयंभू तथा अचिन्त्य आदि हैं। सगुणरूप में वे सृष्टिकर्त्ता, पालन एवं संहारकर्त्ता, ब्रह्मा, विष्णु एवं रुद्रस्वरूप, विश्वरूप, सर्वव्यापी, सर्वज्ञ, अव्यय, जगत्पति, सर्वेश, वरदाता, मोक्षदाता, शाप एवं अनुग्रहकर्त्ता, पंचमुखी, दस भुजा तथा 15 नेत्रवाले, सर्प, चन्द्रमा, मुण्डमाला, पिनाक, डमरू, त्रिशूल, मृगचर्म आदि को धारण करनेवाले, ऐश्वर्यदाता, अष्टमूर्ति एवं अष्ट ऐश्वर्य को धारण करनेवाले, परमगति, सहस्त्रबाहु, सहस्त्रमूर्ति तथा कूटस्थ आदि हैं।

चूँकि शिव वरदाता, मोक्षदाता, ऐश्वर्यदाता, शाप एवं अनुग्रह के सामर्थ्य से युक्त हैं, इसलिये उनकी उपासना करनी चाहिये। भगवान् शिव को प्रसन्न करने के लिये सर्वोत्कृष्ट साधन है पंचाक्षर-मंत्र के द्वारा उपासना। इस पुराण में पंचाक्षर मन्त्र के द्वारा शिवोपासना की विधि की विस्तार से चर्चा की गयी है। माला के द्वारा मन्त्र को किस प्रकार जपना चाहिये, माला कैसी हो तथा किन-किन क्षेत्रों में उपासना से शीघ्र सिद्धि मिलती है, इसकी चर्चा इस पुराण में की गयी है। कहा गया है कि वाराणसी एवं कामरूप (कामाख्या) में साधन करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है।

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

सन्त का प्रभाव

यत्र सन्तः प्रवर्त्तंते तत्र दुःखं न बाधते।
वर्तते यत्र मार्तण्डः कथं तत्र तमो भवेत्।। (नार. महापु. पूर्वखण्ड 7/71)

जहाँ पर सन्त विराजमान होते हैं वहाँपर दुःख बाधा नहीं पहुँचा सकते। क्या कभी सूर्य के रहते अंधकार छा सकता है?